classmate
Date
Page

पाठ्यक्रम के प्रकल्प निर्माण की प्रक्रिया -
पाठ्यचर्या प्रकल्प निर्माण की प्रक्रिया

पाठ्यचर्या निर्माण प्रक्रिया की आदर्शमय स्थिति वह है जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर पाठ्यचर्या का चुनाव करें, शिक्षक विद्यार्थियों की रुचियों, क्षमताओं को तथा वातावरणीय दशाओं को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या के मुख्य सिद्धान्तो के आधार पर पाठ्यचर्या बनाये तो यह अति उत्तम विधि होती है।

पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया पाठ्यचर्या के क्रियात्मक पक्ष से सम्बन्धित है। फिलिप स्चण्टेलर की दृष्टि में पाठ्यक्रम के क्रियात्मक पक्ष के अन्तर्गत उद्देश्य, अर्न्तवस्तु तथा शिक्षण विधियों को शामिल किया जा सकता है। इन तीनों की अन्तर्क्रिया के परिणामस्वरूप ही विद्यार्थियो की शैक्षिक गतिविधियां प्रकाश में आती हैं। चूंकि पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या की सहायता से ही शिक्षा के उद्देश्यों व लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। अतः पाठ्यचर्या इस प्रकार की होनी चाहिए कि विषय-वस्तु पाठ्यचर्या में सभी बातो के विकास में सहायता प्रदान करें।

प्रसिद्ध विद्वान डी० के० व्हीलर ने अपनी पुस्तक Curriculum Process में पाठ्यक्रम-प्रक्रिया की विस्तृत विवेचना की है; व्हीलर के अनुसार पाठ्यचर्या-संरचना के प्रमुख पाँच सोपान या पद है। जो निम्नलिखित है।

① शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण
② निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उपयुक्त अधिगम -अनुभवों का चयन

प्रबन्धक
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताजा, बलिया

classmate
Date
Page

(3)- अधिगम-अनुभवों को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त अन्तर्वस्तु का चयन

(4)- अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया की दृष्टि से चयनित अधिगम-अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु का संगठन

(5)- सम्पूर्ण प्रक्रिया का, उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से मूल्यांकन -

ये एक-दूसरे को इस प्रकार प्रभावित करते हुए चलते हैं कि एक की परिणति दूसरे का प्रारम्भ सिद्ध होती ~~है~~। इनके एक-दूसरे से गुम्फित सम्बन्ध के कारण इन पर पृथक-पृथक कार्य करना सम्भव नहीं है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते ~~कर~~ हुए व्हीलर महोदय ने पाठ्यचर्या की संरचना प्रक्रिया को वृत्ताकार माना है।

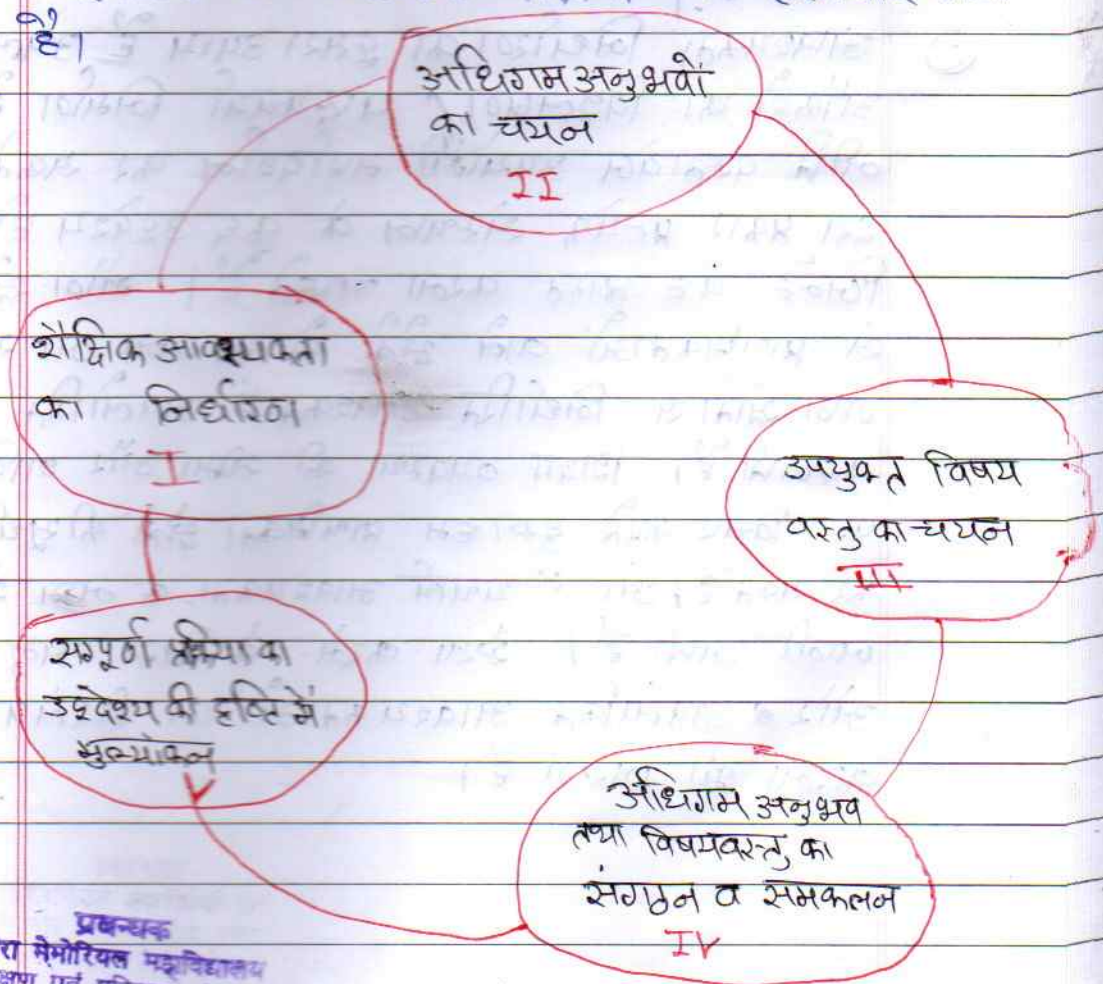

प्रबन्धक
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर ताला बलिया

① शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण :-

पाठ्यचर्या छात्रों को इस योग्य बनाने के लिए तैयार की जाती है कि वे समाज सापेक्ष व्यवहार को सीख सकें। चूँकि छात्रों की पृष्ठभूमि भिन्न होती है अतः यह आवश्यक है कि सामाजिक पृष्ठभूमि में जुड़ी उनकी भिन्नताओं का निदान किया जाए। अतः पाठ्यचर्या निर्माण से पूर्व सबसे प्राथमिकता लक्षित छात्रों को पहचानने व उनका प्रोफाइल ([redacted]) तैयार करने की होती है।

① हम एक विशेष सर्वेक्षण द्वारा शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण करें। हम लक्षित समूह सम्बन्धी उन पक्षों का अध्ययन करें जिनमें शैक्षिक निवेश की जरूरत है।

② आवश्यकता निर्धारण का दूसरा उपाय है उपलब्ध आँकड़ो का विश्लेषण। पाठ्यचर्या निर्माण में नीति दस्तावेज उपयोगी मार्गदर्शन कर सकते हैं, इस प्रकार प्रत्येक संस्थान के कुछ उद्देश्य होते हैं जिन्हें वह प्राप्त करना चाहते है। गौण स्रोत से प्राथमिकताओं वाले क्षेत्रों को पहचाना जा सकता है। गौण स्रोतों से निर्धारित आवश्कताएँ अवलोकित आवश्यकताएँ कहलाती है। शिक्षा व्यवस्था की सीमा और शक्तियों पर विचार करते हुए हम प्राथमिकता क्षेत्रों की सूची तैयार कर सकते हैं, जो "यथार्थ आवश्यकता" के नाम से जानी जाती है। ऐसा करने के लिए अनुभूत और अवलोकित आवश्यकताओं का विश्लेषण करना भी जरूरी है।

मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

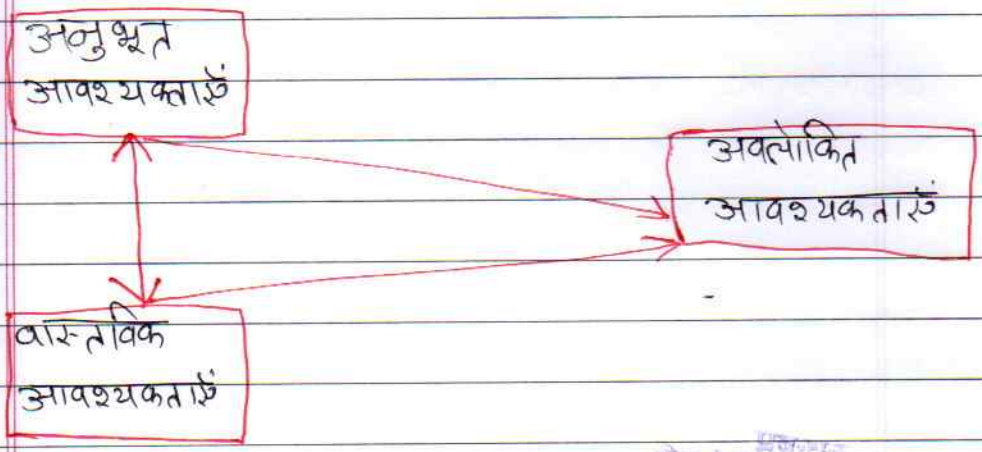

classmate
Date
Page

प्रबन्धक
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर ताखा, बलिया